



अन्यायपूर्ण असमानताएँ: भारत में असमानता का अवलोकन

यह एडिटरियल 30/01/2024 को 'द हट्टि' में प्रकाशित ["Growth mania can be injurious to society"](#) लेख पर आधारित है। इसमें भारत में जारी आर्थिक विकास के बावजूद बनी रही असमानता की चर्चा की गई है और इस मुद्दे के समाधान के लिये प्रभावी रणनीतियों पर विचार किया गया है।

प्रलम्ब के लिये:

[WEF, GDP, GST, संवृद्धि, GHI सूचक, वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट, OECD, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम योजना \(MGNREGA\), राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मशिन \(NRHM\), प्रधानमंत्री जन धन योजना](#)।

मेन्स के लिये:

भारत का हालिया आर्थिक विकास पथ, भारत में असमानता की प्रवृत्ति, भारत में बढ़ती असमानता, समावेशी विकास, भारत में समावेशी विकास हासिल करने के कदम।

हाल ही में [वैश्व आर्थिक मंच \(WEF\)](#) के अध्यक्ष ने भारत की सराहना की और इसे नकट भविष्य के 10 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के रूप में देखा। हालाँकि, भले ही भारत अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर रहा है, इस प्रगतिका लाभ हर किसी तक नहीं पहुँच रहा है, विशेष रूप से उन लोगों तक जो हाशिये पर स्थित हैं।

आर्थिक विकास पर विशेष केंद्रित बने रहने के दृष्टिकोण पर भारत में चिंता बढ़ रही है। वृहत समावेशी विकास सुनिश्चित करने के लिये नीतितगत हस्तक्षेप और व्यापक सरकारी कार्रवाइयों की तत्काल आवश्यकता महसूस की जा रही है।

भारत का हालिया आर्थिक विकास प्रक्षेपवक्र:

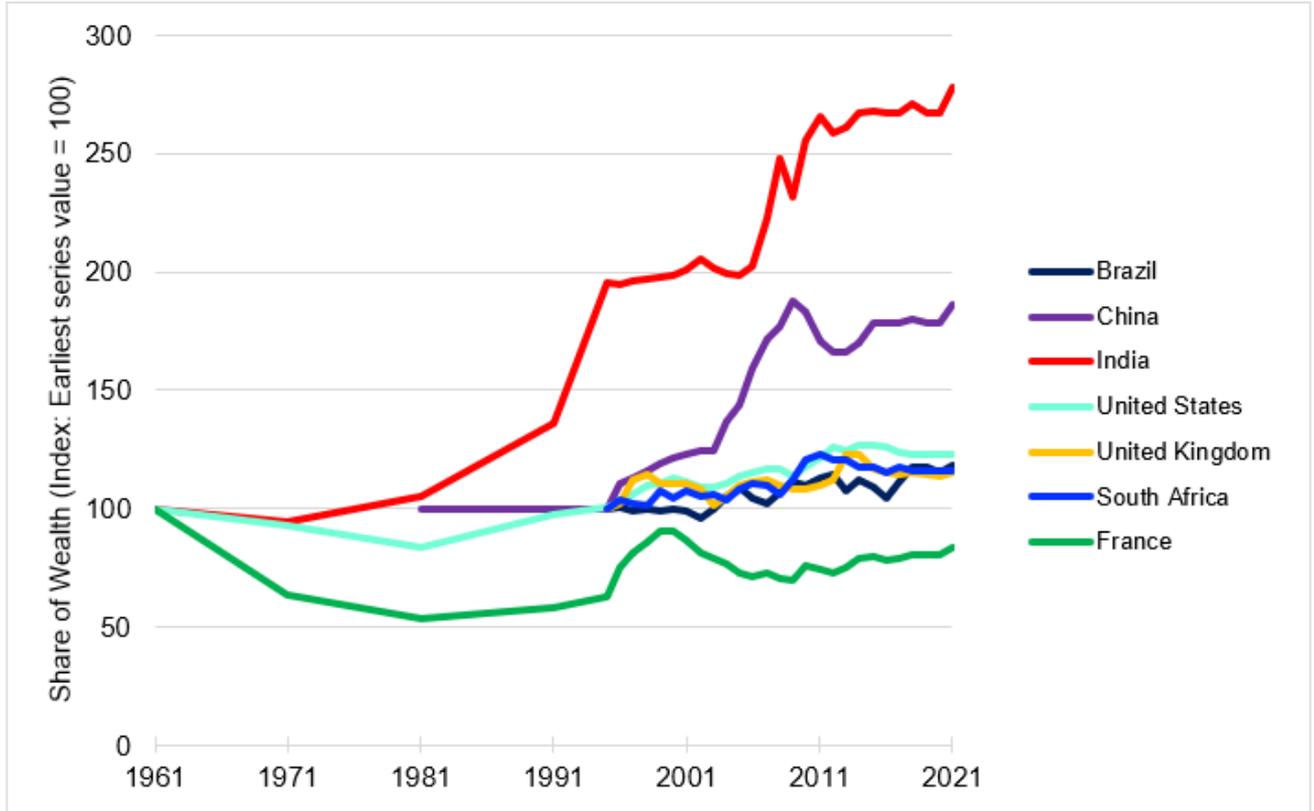
- वित्त वर्ष 2022/23:** भारत की वास्तविक जीडीपी में अनुमानित 6.9% की वृद्धि हुई। यह वृद्धि मजबूत घरेलू मांग, सरकार द्वारा प्रोत्साहित अवसंरचना निवेश में वृद्धि और विशेष रूप से उच्च आय अर्जकों के बीच मजबूत नज्जि उपभोग से प्रेरित थी।
- वित्त वर्ष 2023/24:** 2023-24 के दौरान वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि वर्ष 2022-23 में 7.2% की तुलना में 7.3% अनुमानित है। वर्ष 2024 में **वैश्विक जीडीपी रैंकिंग में भारत 5वें स्थान पर रहा**। देश की अर्थव्यवस्था 3.7 ट्रिलियन डॉलर की बताई गई है, जो एक दशक पहले 1.9 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी के साथ 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था की स्थिति से एक उल्लेखनीय प्रगतिका इंगति करता है।
- भविष्य की संभावनाएँ:**
 - 'सेक्टर फॉर इकोनॉमिक्स एंड बिजनेस रिसर्च' के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था वर्ष 2030 तक 7.3 ट्रिलियन डॉलर और वर्ष 2035 तक 10 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचने की ओर अग्रसर है।
 - भारत सरकार ने वर्ष 2047 तक भारत को 'विकसित राष्ट्र' में बदलने का महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है।

भारत में असमानता की कौन-सी प्रवृत्तियाँ नज़र आती हैं?

- धन असमानता:** भारत विश्व के सबसे असमान देशों में से एक है, जहाँ शीर्ष 10% आबादी के पास कुल राष्ट्रीय संपत्तिका 77% भाग पाया जाता है। भारतीय आबादी के सबसे समृद्ध 1% के पास देश की 53% संपत्तिका मौजूद है, जबकि आबादी का आधा गरीब हिस्सा राष्ट्रीय संपत्तिका मात्र 4.1% के लिये संघर्षरत है।
- आय असमानता:** [वैश्व असमानता रिपोर्ट \(World Inequality Report\), 2022](#) के अनुसार भारत विश्व के सबसे असमान देशों में से एक है, जहाँ शीर्ष 10% और शीर्ष 1% आबादी के पास कुल राष्ट्रीय आय का क्रमशः 57% और 22% हिस्सा है, जबकि निचले 50% की हिस्सेदारी घटकर 13% रह गई है।
- गरीबों पर कर का बोझ:** देश में कुल वस्तु एवं सेवा कर (GST) का लगभग 64% नचिली 50% आबादी से प्राप्त होता है, जबकि इसमें शीर्ष 10% का योगदान मात्र 4% है।
- स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच का अभाव:** कई आम भारतीयों को आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल नहीं मिल पाता है। उनमें से 63 मिलियन (लगभग प्रति सेकंड दो लोग) हर वर्ष स्वास्थ्य देखभाल की लागत के कारण गरीबी में धकेले दिये जाते हैं।

- **वश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति, 2023:** भारत की लगभग 74% आबादी स्वस्थ आहार ग्रहण कर सकने की वहनीयता नहीं रखती जबकि 39% को पर्याप्त पोषक तत्व प्राप्त नहीं होता।
- **वैश्विक भुखमरी सूचकांक 2023:** भारत का वर्ष 2023 का GHI स्कोर 28.7 रहा, जो GHI भुखमरी गंभीरता पैमाने (GHI Severity of Hunger Scale) पर गंभीर स्थिति है।
 - भारत में बच्चों की वेस्टिंग दर 18.7 है, जो करिपीट में सर्वाधिक है।
- **लैंगिक असमानता: ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2023** में भारत 146 देशों में 127वें स्थान पर रहा और कार्यबल में 'महिलाओं की अनुपस्थिति' (missing women) लगातार बनी रही समस्या का सामना कर रहा है जो एक जटिल समस्या है।

Share of Wealth held by Top 1% (1980-2021)



भारत में उच्च आर्थिक विकास के बावजूद बढ़ती असमानता के कारण:

- **धन संचय:**
 - **धन का संकेंद्रण:** कुछ लोगों के हाथों में धन का संकेंद्रण पीढ़ियों तक असमानता को कायम रख सकता है, क्योंकि अमीर अपने लाभ की स्थिति को अपने वंशजों में स्थानांतरित कर सकते हैं।
 - **अपर्याप्त भूमि सुधार:** अनुपयुक्त भूमि सुधारों के परिणामस्वरूप आबादी का एक बड़ा हिस्सा भूमिहीन बना रह सकता है या उसके पास अपर्याप्त भूमि होगी, जिससे वे गरीबी और आर्थिक अस्थिरता के प्रति संवेदनशील बन सकते हैं।
 - **'क्रोनी कैपिटलिज़्म':** भ्रष्ट आचरण और पक्षपात के परिणामस्वरूप किसी चुनदा समूह के बीच धन संचय की स्थिति बन सकती है, जो असमानता में योगदान दे सकती है।
- **समावेशी विकास नीतियों का अभाव:**
 - **आर्थिक लाभ का वषिम वितरण:** आर्थिक विकास से कुछ क्षेत्रों या आय समूहों को असमान रूप से लाभ प्राप्त हो सकता है, जिससे धन के असमान वितरण की स्थिति बन सकती है।
 - **प्रतगामी कराधान नीतियाँ:** कर प्रणालियाँ जो अमीरों के पक्ष में झुकी होती हैं या प्रगतशीलता का अभाव रखती हैं, आय असमानता में योगदान कर सकती हैं।
 - **सामाजिक सुरक्षा जाल की कमी:** अपर्याप्त सामाजिक सुरक्षा जाल और कल्याण कार्यक्रम कमज़ोर आबादी को पर्याप्त समर्थन से रहति छोड़ सकते हैं, जिससे धन का अंतर बढ़ सकता है।
- **अपर्याप्त श्रम नीतियाँ:**
 - **अर्थव्यवस्था का वित्तीयकरण:** वित्तीय बाज़ारों पर बल देने और उत्पादक नविशों पर अटकलों से वित्तीय क्षेत्र में धन का संकेंद्रण हो सकता है।
 - **वेतन/मज़दूरी अंतराल:** कुशल और अकुशल श्रमिकों के बीच मज़दूरी अंतराल आय असमानता में योगदान कर सकता है। नमिन वेतन और कम लाभ वाले अनौपचारिक श्रम बाज़ार आय वभाजन को बढ़ा सकते हैं।

- **कोई न्यूनतम वेतन नहीं:** कमज़ोर श्रम बाज़ार नीतियों (अपर्याप्त न्यूनतम वेतन वनियमनों और सीमति सामूहिक सौदेबाजी अधिकारों सहित) आय असमानताओं में योगदान कर सकती हैं।
- **सामाजिक अपवर्जन:**
 - **जातगत भेदभाव:** जातिपर आधारित सामाजिक अपवर्जन ने कुछ समूहों को हाशिये पर धकेलकर और अवसरों, संसाधनों एवं लाभों तक उनकी पहुँच को सीमति कर भारत में असमानता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
 - **लैंगिक असमानता:** लिंग (gender) के आधार पर भेदभाव से रोज़गार के अवसरों तक असमान पहुँच और वेतन असमानताएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
 - **शिक्षा तक पहुँच का अभाव:** गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक असमान पहुँच ने ऊर्ध्वगामी गतिशीलता के अवसरों को सीमति कर दिया है, जो मौजूदा असमानताओं को और प्रबल करता है।
 - **प्रौद्योगिकी संबंधी वंचना:** स्वचालन और प्रौद्योगिकीय प्रगतियों के कारण कुछ समूहों के लिये रोज़गार में वसिस्थापन और वेतन में गतिहीनता की स्थितिका निर्माण होता है, जिससे आय असमानता बढ़ जाती है।

समावेशी विकास:

- **आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (Organisation for Economic Co-operation and Development- OECD)** के अनुसार, समावेशी विकास ऐसा आर्थिक विकास है जो संपूर्ण समाज में उचित रूप से वितरित होता है और सभी के लिये अवसर पैदा करता है।
- इसका अर्थ स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसी आवश्यक सेवाओं तक गरीबों की पहुँच सुनिश्चित होना है। इसमें अवसर की समानता प्रदान करना, शिक्षा एवं कौशल विकास के माध्यम से लोगों को सशक्त बनाना आदि शामिल है।
- **समावेशी विकास के लिये सरकार द्वारा कार्यान्वयित विभिन्न योजनाएँ:**
 - महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम योजना (MGNREGA)
 - प्रधानमंत्री रोज़गार सृजन कार्यक्रम (PMEGP)
 - पंडित दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना (DDU-GKY)
 - दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय शहरी आजीविका मशिन (DAY-NULM)
 - समग्र शिक्षा योजना 2.0
 - राष्ट्रीय स्वास्थ्य मशिन
 - स्वच्छ भारत मशिन
 - आयुष्मान भारत
 - प्रधानमंत्री जनधन योजना
- **भारत में समावेशी विकास प्राप्त करने हेतु आवश्यक कदम:**
 - **समावेशी ढाँचे को समर्थन देना:**
 - **संवैधानिक प्रावधान लागू करना:** नीतगत उपायों के माध्यम से मूल अधिकारों में नहिती समता की संवैधानिक गारंटी लागू करें। इन अधिकारों को सुदृढ़ करने के लिये बनाई गई सरकारी नीतियों को सख्ती से लागू करने की ज़रूरत है।
 - **प्रगतशील कराधान:** भारत में प्रगतशील कराधान को लागू करने से यह सुनिश्चित करने के रूप में आय असमानता को कम करने में मदद मिल सकती है कि जो लोग अधिक आय अर्जित करते हैं, वे अपनी आय का अधिक अनुपात करों के रूप में चुकाते हैं।
 - भारतीय अरबपतियों पर मात्र 1% संपत्ति कर भारत की सबसे बड़ी स्वास्थ्य सेवा योजना 'राष्ट्रीय स्वास्थ्य मशिन' को वित्तपोषित करने के लिये पर्याप्त होगा।
 - भारतीय अरबपतियों पर 2% कर लगाने से तीन वर्ष तक भारत के कुपोषित लोगों को पोषण समर्थन प्रदान किया जा सकता है।
 - **समावेशी शासन:** नागरिक भागीदारी को प्रोत्साहित कर, पारदर्शिता को बढ़ावा देकर और भ्रष्टाचार को कम कर समावेशी शासन को बढ़ावा दिया जाना चाहिये। स्थानीय स्वशासन को सशक्त बनाना और नरिणय लेने की प्रक्रियाओं में हाशिये पर स्थिति समुदायों को संलग्न करना भी सकारात्मक कदम होगा।
 - **नज्जि क्षेत्र की भागीदारी:** समावेशी विकास पर ध्यान केंद्रित करने वाली **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR)** पहलों को प्रोत्साहित करें। नज्जि कंपनियों को सामाजिक क्षेत्रों में निवेश करने और सामुदायिक विकास परियोजनाओं का समर्थन करने के लिये प्रोत्साहित करें।
- **बुनियादी सुविधाओं की पहुँच बढ़ाना:**
 - **सार्वजनिक सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुँच:** सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा लाभ, रोज़गार गारंटी योजनाओं जैसी सार्वजनिक वित्त पोषित उच्च गुणवत्तापूर्ण सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित कर असमानता को व्यापक रूप से कम किया जा सकता है।
 - **रोज़गार सृजन:** भारत के श्रम-गहन वनिरिमाण क्षेत्र में उन लाखों लोगों को शामिल करने की क्षमता है जो खेती करना छोड़ रहे हैं, जबकि सेवा क्षेत्र शहरी मध्यम वर्ग को लाभ पहुँचाता है।
 - **महिला सशक्तीकरण:** महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने के लिये शिक्षा, रोज़गार एवं उद्यमिता में लैंगिक समानता को बढ़ावा दें।
- **सामाजिक और वित्तीय समावेशन:**
 - **भूमि सुधार:** भूमि स्वामित्व और करियेदारी के मुद्दों के समाधान के लिये भूमि सुधार लागू करें। भूमि संसाधनों का निषिपक्ष एवं समतामूलक वितरण सुनिश्चित करें।
 - **नागरिक समाज को बढ़ावा देना:** पारंपरिक रूप से उत्पीड़ित और दबे हुए समूहों को वृहत आवाज़ प्रदान की जाए, जहाँ इन समूहों के भीतर यूनियनों और संघों जैसे नागरिक समाज समूहों को सक्रिय करना शामिल है।
 - **प्रौद्योगिकी और नवाचार:** सभी के लिये नए अवसर पैदा करने के लिये तकनीकी प्रगतियों को अपनाया जाए।
 - सुनिश्चित किया जाए कि तकनीकी प्रगतियों का लाभ समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचे।

नषिकरषः

असमानता के अंतरनहिति कारणों को संबोधति कर सकने वाली समावेशी नीतियों के अंगीकरण एवं करयान्वयन से भारत में एक अधकि समतामूलक समाज की ओर संकरमण कर सकता है। यह परविरतनकारी दृषुटकिेण **संयुक्त राषुटर के सतत वकिस लकषुय 10** की आकांक्षाओं के भी अनुरूप है।

अभयास प्रश्नः भारत के उचुच आरुथकि वकिस के बावजूद बढ़ती असमानता के कारणों पर चरुचा कीजयि और भारत में समावेशी वकिस प्राप्त करने के उपाय सुझाइये।

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वरुष के प्रश्न

????????????????

Q. ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में उल्लखिति समावेशी वकिस में नमिनलखिति में से कौन सा एक शामिल नहीं है: (2010)

- (a) गरीबी में कमी लाना
- (b) रोजगार के अवसरों का वसितार करना
- (c) पूंजी बाजार को मज़बूत बनाना
- (d) लैंगकि असमानता में कमी लाना

उत्तर: C

????????????????:

प्र. कोवडि-19 महामारी से भारत में वरुग असमानताओं और गरीबी को बढ़ावा मलिा है। टपिपणी कीजयि। (2020)

